

V. 537. δεινῶς γὰρ ἐκ γυναικὸς.

V. 538. θανῶν.

V. 541. οὐκ ἔστι παῖς νιν.

V. 557. Hic versus πολὺς παραγμὸς in Msto
deest.

V. 558. λυπεῖται μόνον.

V. 562. ἄρ' εἰσὶν.

V. 564. σπουδοῖς, suprascripto αῖς. Noli
praetervidere, lectionem σπουδοῖς ad re-
ceptam Musgravii coniecturam proxime
accedere.

V. 566. ἀρεσκόντως ἔχει.

V. 576. οὔτε δυσγενῆς.

V. 577. Μυκῆνας οἷσθα.

V. 586. οὐκοῦν δίκαιον. Bene, modo dis-
tractis vocibus scribatur οὐκ οῦν.

V. 588. ἀλλ' ὡς γενέσθω.

V. 592. αὐτὸς σέσωται.

V. 595. φίλοις τ' ὀρθοῖς, superscripto ὀρ-
θῶς.